ग्रामीण विकास में सूचना प्रौद्योगिकीः संभावनाएं तथा चुनौतियाँ

कु0 पिंकी*

शोध–सार

भारत का वास्तविक विकास ग्रामीण विकास से ही संभव है। ग्रामीण विकास का अभिप्राय, उसके सम्पूर्ण स्वरूप में ग्रामीण क्षेत्रों के व्यापक विकास से है तथा इस संदर्भ में सूचना प्रौद्योगिकी का उद्देश्य लोगों द्वारा ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के निर्माण और कार्यान्वयन में सहभागिता के साथ–साथ दक्षता, खुलापन और अनुक्रिया–शीलता लाना है। उन सभी आयामों (कृषि, ऊर्जा, शिक्षा, स्वास्थ्य–सफाई आवास) जिन पर ग्रामीण विकास की आधारशिला है, सूचना प्रौद्योगिकीद्वारा नवनिर्मित, नवाचारों इत्यादि को जन–जन तक पहुँचाना है। 156 करोड़ भारतीय ग्रामीण परिवारों को सशक्त बनाने तथा नए, रोजगार, सृजन, परिवहन, बिजली और इंटरनेट में निवेश की बहुत आवश्यकता है। इसी उद्देश्य को पूरा करने हेतु प्रधानमंत्री डिजिटल साक्षरता अभियान के तहत 31 मार्च, 2019 तक प्रत्येक पात्र परिवार के सदस्य को डिजिटल माध्यमों पर साक्षर बनाने पर बल दिया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान ग्रामीण विकास में सूचना प्रौद्योगिकीकी भूमिका, संभावनाओं तथा चुनौतियों की विवेचना एवं विश्लेषण करना है। शोध पत्र हेतु तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्द : ग्रामीण विकास, दक्षता, नवाचार, युवा–महिला सशक्तिकरण, डिजिटल साक्षरता, कृषि

भारत के विकास का रास्ता गावों से होकर गुजरता है। गाँवों के विकास के बिना भारत के विकास की बात करना बेईमानी होगी। सूचना तकनीक के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व एक 'गाँव' हो गया है। सूचना क्रान्ति से पूर्व संभवतः ग्राम लघु गणराज्य के रूप में जाने जाते थे (मेटकॉफ) तथा गांव लगभग अपनी सम्पूर्ण आवश्यकताओं को पूर्ण करने में आत्मनिर्भर, स्वायत्त और स्वतंत्र नहीं है। (दुबे) भारत की अर्थव्यवस्था ने विश्व अर्थव्यवस्था के लिए द्वार खोले हैं तथा इस दिशा में ग्रामीण क्षेत्र कोई अपवाद नहीं है। वैश्वीकरण के इस युग में सूचना क्रान्ति ने ग्रामीण अंचलों में सम्पूर्ण विश्व से जुड़ने हेतु नई संभावना पैदा की है।

सूचना संचार क्षेत्र में एक कहावत है कि सूचना ही शक्ति है (मैक्लुहान) तथा आज के दौर में सूचना प्रौद्योगिकी में इतनी समर्थ है कि यह नागरिकों को विभिन्न प्रकार की सूचनाएं घर बैठे उपलब्ध करा उन्हे सशक्त जागरूक एवं समाज की मुख्य धारा से जोड़ने में सक्षम बना सकती है। 15 अगस्त, 1995 को विदेश संचार निगम लिमिटेड के माध्यम से पहली बार इंटरनेट प्रदान की गई और इसकी सफलता यह रही कि अगले छः महीने में 10 हजार से अधिक लोग इस माध्यम से जुड़ गये। वर्ष 2010 में 3जी, उसके बाद 4जी सेवाओं ने देश के सामान्यजनों तक इंटरनेट की पहुँच को आसान बनाने का कार्य किया है। इंटरनेट और मोबाइल ए सोसिए शन ऑफ इण्डिया की नवीनतम रिपोर्ट (2014) के अनुसार देश में 30 करोड़ से ज्यादा लोगों तक इंटरनेट की पहुँच है और उपभोक्ताओं के मामले में दुनिया में दूसरे नम्बर पर है वहीं ग्रामीण भारत की बात की जाए तो रिर्पोट के अनुसार 7.8 करोड़ ग्रामीण जनसंख्या रोजाना इंटरनेट का इस्तेमाल कर रही है जबकि 14 करोड़ लोग ऐसे हैं जो महीने में कम से कम एक बार इंटरनेट का इस्तेमाल जरूर करते हैं, हालांकि ग्रामीण आबादी का 50 प्रतिशत हिस्सा ही रोजाना इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहा है किन्तु फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में सूचनाओं की पहुँच का दायरा आसान एवं विस्तारित हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी ग्रामीण समुदायों का सशक्तिकरण, गरीबी उन्मूलन, खाद्य–सुरक्षा और संपोषित विकास के निर्धारणयन में प्रभावशाली साबित हो रही है।

देश के विकास और प्रगति में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। देश का आर्थिक व सामाजिक ढांचा इसी पर टिका है। देश की कुल नियत आय में सोलह प्रतिशत हिस्सा कृषि से प्राप्त होता है तथा देश की लगभग आधी श्रम शक्ति कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रो में प्रविष्टि है। आर्थिक सर्वेक्षण 2016–17 के आधार पर कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों का जीडीपी (सफल घरेलू उत्पाद) में 17.8 प्रतिशत का योगदान रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने पिछले कई दशकों से कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए इसके रख–रखाव संरक्षण, अधिक पैदावार एवं विपणन सम्बन्धी कार्यो में विशेष भूमिका निभाई है। दूर संर्वेदित्र आंकड़ा (रिमोट सेंसर डाटा) के माध्यम से कृषि पर पर्यावरणीय प्रभाव एवं प्राकृतिक संसाधनों की निरन्तर जांच भी की जा सकती है।

पोन्डिचरी के विलियसूर कस्बे में 'ग्राम ज्ञान केन्द्र परियोजना' जिसकी चर्चा मानव विकास रिपोर्ट 1991 में विश्व सूचना विभाजन के सम्बोधन में सृजनात्मक परियोजना के रूप में उल्लिखित हुई। यह परियोजना लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) के जरिए ग्रामीण परिवारों का लेखा–जोखा, अनाज की कीमतें एवं कृषि संबंधी

*शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

जानकारी, बस, रेल, समय सारणी की जानकारी, क्रिकेट, परीक्षा परिणामों की जानकारी इत्यादि सूचनाओं का वितरण इंटरनेट के माध्यम से करती है। वर्तमान में इस विभिन्न जनसूचना केन्द्र, जनसेवा केन्द्र, साइबर कैम्पों इत्यादि कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों के लिए प्रभावकारी सिद्ध हो रहे हैं।

महिलाओं के सशक्तिकरण में सूचना प्रौद्योगिकी की अहम भूमिका परिलक्षित हो रही है। स्त्रियां जो मात्र घर की चारदीवारी और कुछ गिने–चुने सीमित पेशों तक ही सिमट गई थी, उनके लिए विभिन्न व्यवस्थाओं के द्वार खुले हैं। भारत में कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग में 38 प्रतिशत महिलायें ही कार्यरत है। इंटरनेट के प्रारम्भिक समय में पुरूष वर्ग का वर्चस्व रहा किन्तु हाल के वर्षो में महिलाओं ने इस क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की है किन्तु भारत में सूचनाओं तक पहुँच के मामले में भारी लैगिक विषमता देखने को मिलती है और यह शहरी क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र में गम्भीर समस्या बनी हुई है।

गीता सेशू की FAT (Feminist Approach of Technology 2011) रिपोर्ट के अनुसार उत्तर प्रदेश के बुदेलखण्ड से महिलाओं द्वारा ''खबर लहरिया (2000) प्रकाशित अखबार 600 गांवो में बेचा जाता है। 4 प्रांतीय भाषाओं (बुदेली, बज्जिका, भोजपुरी और अवधी) में अनूदित यह समाचार पत्र इन पिछड़े इलाकों में महिलाओं में जागरूकता और डिजिटल विभाजन की खाई को बांटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

वर्तमान युवा शक्ति कार्यशील है तथा जनसांख्यिकी लाभांश की यह स्थिति भारत के लिए विशेष अवसरो के रूप में परिणीति कर सकने की क्षमता रखती है। कलाम (2015) सूचना प्रौद्योगिकी भारतीयों में खासकर युवाओं को ज्यादा जानने, बेहतर संवाद करने और विश्व की ज्ञान अर्थव्यवस्थाओं में योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करेगी। ''सूचना प्रौद्योगिकी युवाओं को नये कौशल रोजगार डिजिटल माध्यमों से जोड़ने तथा सरकारी गैर सरकारी सेवाओं के बारे में जानकारी एवं लाभावित्त होने का अवसर प्रदान करती है। श्रीवास्तव (2018) मोबाइल एप्लीकेशन विश्लेषक कंपनी फ्लरी के अनुसार, हम मोबाइल एप्पल की ओर बढ़ रहे हैं 2015 के आंकड़े के मुताबिक यू–ट्यूब भारत में कुल स्मार्टफोन उपभोक्ता मे से 60 प्रतिशत उपभोक्ता नियमित रूप से इस्तेमाल कर रहे है और यह दिनोंदिन तीव्र गति से बढ़ता ही जा रहा है।

टेलीमेडिसिन (दूरस्थ चिकित्सा) स्वास्थ्य क्षेत्र में विशेषतयाः ग्रामीण सुदूर क्षेत्रों में क्रांतिकारी प्रभावकारी भूमिका में है। फिलीसियानी (Filiciani 2005) मोबाइल फोन, मरीज का आवागमन, परिवहन, किराया, समय की बचत तथा अन्य कई बाधाओ को कम कर रहा है।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य दोनों एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए है। बेहतर शिक्षा बेहतर स्वास्थ्य का मार्ग प्रशस्त कर सकती है उसी तरह बेहतर स्वास्थ्य, बेहतर शिक्षा को। शिक्षा व्यक्ति की उन सभी भीतरी शक्तियों का विकास है जिससे वह अपने वातावरण पर नियन्त्रण रखकर अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर सके (जॉन डयूवी)। विश्व बैंक रिपोर्ट (2003) बाजार का ग्रामीणों तक पहुँचने, गरीबों के लिए संसाधनों की आपूर्ति को बेहतर बनाने, सरकारी सेवाओं में लिए, सूचना एवं संचार में आवश्यक जानकारियों को हस्तांरित करने की तमाम संभावनाएं मौजूद है। अच्छे स्कूल तथा बेहतर शिक्षकों से न पढ़ पाने की समस्या को सूचना प्रौद्योगिकी ने कुछ कम किया है।

भारतीय ग्रामीण समाज सामान्यतया कम गतिशील समाज है। वैश्वीकरण के इस दौर में ग्रामीण समुदायों पर प्रभाव आवश्यक रूप से पड़ा किन्तु अभी भी अशिक्षा, जागरूकता की कमी अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियों इत्यादि के चंगुल से निकल नहीं पा रहा है। हालांकि काफी हद तक सुधार हुआ है सरकारी योजनाओं, कार्यक्रम सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठन इस दिशा में सराहनीय कार्य कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी ने कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य संबंधित क्षेत्रों में प्रभावकारी भूमिका निभा रही है।

साहित्य समीक्षा

- पाण्डेय (2000) ग्रामीण सामाजिक आर्थिक विकास के सन्दर्भ में सूचना संचार की अत्याधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। सूचना संचार माध्यमों से कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र में नवीन तकनीक एवं नवाचारों का चलन बढ़ा है।
- देवपुरा, प्रतापमल (2005) सूचना का अधिकार अधिनियम तथा सूचना प्रौद्योगिकी ने ग्रामीण विकास को दिशा प्रदान करने का कार्य किया है। ग्रामीण–सरकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों में पारदर्शिता आई है।
- पूनिया, मीनाक्षी (2014) भारतीय ग्रामीण क्षेत्र की सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक संरचना का वर्णन फोक मीडिया द्वारा बखूबी लोगों तक पहुँचाता रहा है तथा ग्रामीण परिवेश को जानने में सूचना प्रौद्योगिकी सुलभता प्रदान कर रही है। लोक कलाकार सरकारी योजनाओं, समस्याओं इत्यादि को गीत–संगीत नुक्कड़–नाटिक के माध्यम से परिचित करा रहे हैं जिसमें प्रौद्योगिकी बहुत हद तक उनकी मदद कर रही है।
- देसाई (1989) भारतीय ग्रामीण समाज एवं उसकी संस्कृति का व्यवस्थित अध्ययन हेतु परिवर्तनशील प्रतिमानों को समझना आवश्यक है। यह ग्रामीण जनता

के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा अनेक समूहों, उपसमूहों में बंटे समुदाय को जानने में मदद करता है जिसमें चित्रमय कलायें, लोक कथाएं तथा नृत्य–नाटकों के माध्यम से समझा जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

- ग्रामीण विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका का अध्ययन करना।
- सूचना माध्यमों के प्रभावो का आकलन करना।
- सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रो में आए बदलावों की समीक्षा करना।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक अनुसंधान पर आधारित है एवं तथ्य संकलन हेतु प्राथमिक स्त्रोतों, साक्षात्कार अनुसूची अवलोकन, निरीक्षण, सर्वेक्षण तथा द्वितीयक स्त्रोतो जिसके अन्तर्गत संदर्भ ग्रन्थों पुस्तकों, जर्नल्स, पत्रिकाओं, शोधपत्रों इंटरनेट, समाचार पत्रों इत्यादि द्वारा किया गया है। उत्तरदाताओं का चुनाव उद्देश्य पूर्ण निर्देशन के अन्तर्गत किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र एवं प्रासंगिकता :–

शोध पत्र हेतु शाहजहाँपुर जिले के जलालाबाद विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत विकास खण्ड कलान के सथरा धर्मपुर गांव के 25 सूचनादाताओं का चुनाव पर आधारित है। मानव जीवन का प्रत्येक पहलू इस कान्ति के संदर्भ में आ रहा है। कृषि, व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, राजनीति, महिलायें, युवा एवं बच्चे सभी इससे प्रभावित हुए हैं। वस्तुतः ग्रामीण विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की अहम भूमिका साबित हो रही है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य ग्रामीण विकास में सूचना तकनीकी की संभावनाओं एवं चुनौतियों का अध्ययन करना।

तथ्य विश्लेषण :–

शोध–पत्र हेतु चयनित निर्देश का जन सांख्यिकी परिचय
सारणी संख्या–01

क्र0सं0	आयु वर्ग	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	18–25	11	44
2.	25–30	05	20
3.	30–35	03	12
4.	35–40	02	08
5.	40–45	00	00
6.	45–50	00	00
7.	50–55	01	04
8.	55–60	00	
कुल योग		**25**	**100 प्रतिशत**

क्र0सं0	लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	महिला	07	28
2.	पुरूष	18	72
कुल योग		**25**	**100**

क्र0सं0	वैवाहिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अविवाहित	12	48
2.	विवाहित	13	52
कुल योग		**25**	**100**

क्र0सं0	जाति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सामान्य	10	40
2.	अ0पि0 वर्ग	08	32
3.	अनु0 जाति	07	28
कुल योग		**25**	**100**

क्र0सं0	धर्म	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हिन्दू	18	72
2.	मुस्लिम	07	28
कुल योग		**25**	**100**

क्र0सं0	व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	कृषि	12	48
2.	सरकारी नौकरी	04	16
3.	व्यापार	05	20
4.	अन्य	04	16
कुल योग		**25**	**100**

क्र0सं0	शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	इण्टरमीडिए ट	16	64
2.	उच्च शिक्षा (स्नातक)	09	36
कुल योग		**25**	**100**

क्र0सं0	पारिवारिक संरचना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	संयुक्त परिवार	9	36
2.	ए काकी परिवार	16	64
कुल योग		**25**	**100**

उपरोक्त सारणी द्वारा स्पष्ट है कि अत्यधिक उत्तरदाता 18–25 आयु वर्ग जो कि सूचना तकनीक का सबसे अधिक इस्तेमाल करने वाला वर्ग है तथा लिंग अनुपात के मामले में पुरूष वर्ग का ही अनुपात अधिक है। अतः हम कह सकते हैं कि सूचनाओं की पहुँच का दायरा ग्रामीण महिलाओं में बहुत कम है तथा वही हम देख सकते हैं कि शिक्षा एवं सूचनाओं की पहुँच में क्रमशः

सामान्य जाति (ठाकुर, ब्राहमण, कायस्थ) सर्वाधिक तत्पश्चात अन्य पिछड़ा वर्ग तथा उससे कम अनुसूचित जाति का स्तर है। शिक्षा के मामले में इण्टरमीडिएट उत्तरदाताओं की संख्या अधिक है। धर्म सम्बन्धी सारणी में हिन्दू बहुल गांव में सर्वाधिक हिन्दू 75 प्रतिशत तथा 25 प्रतिशत मुसलमान है। व्यवसायिक श्रेणी के अन्तर्गत सर्वाधिक कृषि 50 प्रतिशत फिर क्रमशः व्यापार (दुकानदार, ठेकेदार, स्कूल मैनेजर इत्यादि) सरकारी नौकरी 27 प्रतिशत तथा अन्य संवर्ग के तहत जिसमें मजदूर, चपरासी, सब्जी वाले, चाट–टिक्की वाले इत्यादि है। वैवाहिक स्थिति में विवाहित अधिक है तथा पारिवारिक संरचना के तहत गांवो में एकाकी परिवारों का प्रतिशत अधिक है।

सारणी संख्या–02
सूचना प्राप्ति का स्त्रोत

1.	हाँ	17	68%
2.	नही	08	32%
	कुल	25	100%

क्र0सं0	स्त्रोत	उत्तरदाता	प्रतिशत
1.	मोबाइल/इण्टरनेट	20	80%
2.	रेडियो	01	04%
3.	टी0वी0	02	08%
4.	अखबार	02	08%
	कुल योग	**25**	**100%**

सारणी संख्या–02 से पता चलता है कि 80% लोग मोबाइल इण्टरनेट द्वारा सूचनाएं प्राप्त करते हैं एवं 04% लोग रेडियो तथा बाकी अन्य टी0वी0 एवं अखबार के माध्यम से सूचनाओं को प्राप्त करते हैं।

स्मार्टफोन के इस्तेमाल संबंधी
सारणी सं0–03

1.	हाँ	21	84%
2.	नहीं	04	16%
	कुल	25	100%

प्रस्तुत सारणी दर्शाती है कि अधिकांश 84% उत्तरदाता स्मार्टफोन का इस्तेमाल करते हैं हालांकि इनमें से कुछ उत्तरदाता अपने माता–पिता या भाई–बहनों का मोबाइल इस्तेमाल करते हैं। इसी संबंध में मोबाइल फोन के इस्तेमाल संबंधी जानकारी लेने पर पता चलता है कि 60% उत्तरदाता मोबाइल लगभग 6–8 घंटे तथा 22% 4–5 घंटे एवं 18% 2–2.30 घंटे उपयोग करते हैं।

गांव में बिजली पर्याप्तता संबंधी
सारणी संख्या–04

सारणी संख्या–04 से ज्ञात है कि 68% लोगों का मानना है कि गांव में बिजली लगभग ठीक–ठीक आती है। जबकि 32% लोग बिजली की सप्लाई से असन्तुष्ट नजर आये हैं।

इण्टरनेट द्वारा विभिन्न जानकारियां प्राप्त करने
सारणी संख्या–05

1.	कृषि	05	20%
2.	शिक्षा	06	24%
3.	व्यवसाय	04	16%
4.	घरेलू रख रखाव एवं अन्य	03	12%
5.	मनोरंजन	07	28%
	कुल योग	**25**	**100%**

प्रस्तुत सारणी से पता चलता है कि अधिकांशतया उत्तरदाता मनोरंजन हेतु 28% एवं शिक्षा संबंधी 24% जानकारी हेतु इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं जबकि कृषि संबंधी जानकारी हेतु 20% इसके बाद क्रमशः व्यवसाय एवं घरेलू जानकारियां के लिए इण्टरनेट का इस्तेमाल किया जाता है।

सूचना तकनीक से कृषि क्षेत्र में लाभ संबंधी
सारणी संख्या–06

1.	हाँ	14	56%
2.	नहीं	11	44%
	कुल	**25**	100%

प्रस्तुत सारणी दर्शाती है कि गांव में 56% उत्तरदाताओं का मानना है कि सूचना प्रौद्योगिकी ने कृषि तथा संबद्ध क्षेत्र में जानकारी पहुचाने में सहायता की है जिससे कृषि क्षेत्र को फायदा हुआ है तथा हो रहा है। वहीं 44% लोगों का मानना है कि कोई विशेष लाभ नहीं हुआ है।

सूचना प्रौद्योगिकी से महिलाओं में जागरूकता संबंधी
सारणी संख्या–07

1.	हाँ	17	68%
2.	नहीं	08	32%
	कुल	**25**	**100%**

सारणी संख्या–07 से ज्ञात है कि अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना है कि सूचना–संचार माध्यमों से महिलाओं की स्थिति में व्यापक सुधार हुआ है। वहीं सूचनादाता बताते हैं कि कोई खास सुधार एवं जागरूकता नहीं फैली है बल्कि इन सूचना माध्यमों से समय का दुरूपयोग और बेवजह के खर्च बढ़ गये हैं।

ग्रामीण महिलाओं के पास फोन संबंधी विवरण
सारणी संख्या–08

1.	हाँ	11	44%
2.	नहीं	14	56%
	कुल	**25**	**100%**

प्रस्तुत सारणी दर्शाती है कि ग्रामीण महिलाओं में मात्र 44% के पास ही मोबाइल फोन हैं और इनमें भी अधिकतर के पास सादा (की पैड) फोन ही है, जबकि 56% महिलाओं के पास नहीं है। हालांकि ये महिलायें घर में उपलब्ध मोबाइल फोन द्वारा वीडियो कालिंग, यू–ट्यूब तथा अन्य घरेलू जानकारियां तथा मनोरंजन के लिए इस्तेमाल कर लेती हैं।

युवाओं द्वारा सूचना तकनीक का इस्तेमाल

सारणी संख्या–09

1.	शिक्षा	09	36%
2.	खेल	04	16%
3.	व्यवसाय	05	20%
4.	मनोरंजन	07	28%
	कुल योग	**25**	**100**

सारणी संख्या–09 द्वारा स्पष्ट होता है कि 36% ग्रामीण युवा सूचना तकनीक का प्रयोग शिक्षा संबंधी जानकारी लेने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं तथा इसके बाद मनोरंजन एवं वीडियो गेम तथा अन्य आनलाइन गेम्स में अपना समय–पैसा खर्च कर रहे हैं। इसके अलावा व्यवसाय में भी युवा सूचना तकनीकी का उचित इस्तेमाल कर रहे हैं।

इसके अलावा सूचना तकनीक का ग्रामीण युवाओं पर पड़ने वाले नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभावों के बारे में जानने पर पता चला कि ग्रामीण युवाओं पर दोनों तरफ के प्रभाव दृष्टिगोचर हुए हैं। सकारात्मक प्रभावों के अन्तर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवसाय सम्बन्धी जानकारियां प्राप्त कर तकनीक का बेहतर इस्तेमाल कर जीवन सशक्त बना रहे हैं वहीं दूसरी तरफ मोबाइल स्क्रीन पर अधिक समय अश्लील चलचित्रों को देखना, भ्रामक जानकारियां इत्यादि बुरे प्रभाव हो रहे हैं।

निष्कर्ष:

उपरोक्त आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में सूचना तकनीक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कृषि से लेकर ग्रामीण शिक्षा, स्वास्थ्य मनोरंजन का दायरा, संस्कृति तथा जीवन शैली इत्यादि को एक नया रूप प्रदान किया है। कृषि क्षेत्र में उपज को बढ़ाना भण्डारण, विपणन इत्यादि की बेहतर जानकारी से कृषि का विकास हो रहा है। धीरे–धीरे ही सही किन्तु महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन स्वागत योग्य है। महिलायें सम्पूर्ण विश्व से जुड़ रही हैं। भिन्न–भिन्न संस्कृतियों तथा ज्ञान एवं समझ के स्तर को बढ़ाने का कार्य सूचना प्रौद्योगिकी ने वृहद स्तर पर किया है तथा लोगों के जीवन को समुन्नत बनाया है एवं साथ ही इसने कई समस्याओं एवं चुनौतियों को भी बढ़ाया है। ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में शिक्षा समझ एवं जागरूकता का स्तर इतना उन्नत नहीं है कि ग्रामीण प्राप्त सूचनाओं का सही एवं उचित विश्लेषण कर सके इससे उन पर कुछ सूचनाओं का प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ रहा है। फिर भी तमाम समस्याओं एवं चुनौतियों को दूर करने का कार्य सूचना प्रौद्योगिकी ने बखूबी निभाया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- सेन नारायण, सुनेत्रा एवं नारायणन शालिनी, इण्डिया कनेक्टेड, 2019 सेज पब्लिकेशन नई दिल्ली
2- दुबे, श्यामाचरण, भारतीय ग्राम, वाणी प्रकाशन 2000, पृ0सं0 13
3- कुरूक्षेत्र नवम्बर, 2019
4- योजना, 2018
5- महिलाओं के लिए रोशनी की उम्मीदः डिजिटल इंडिया, hindi.webdunia.com
6- सेन नारायण, सुनेत्रा एवं नारायणन शालिनी, इण्डिया कनेक्टेड, 2019 सेज पब्लिकेशन नई दिल्ली
7- कलाम, भारत 2020 और उसके बाद, पेंगुइन बुक्स पेंगुइन रैंडम हाउस इम्प्रिंट, 2015
8- श्रीवास्तव मुकुल, डिजिटल मीडिया का सामाजिक पक्ष, 2018 यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्र0 लि0 नई दिल्ली
9- सेन नारायण, सुनेत्रा एवं नारायणन शालिनी, इण्डिया कनेक्टेड, 2019 सेज पब्लिकेशन नई दिल्ली
10- पाण्डेय, पी0 ए0 न0, ग्रामीण विकास एंव संरचनात्मक परिवर्तन, 2000 रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली प्र0 सं0 64, 72
11- देवपुरा, प्रतापमल, ग्रामीण विकास का आधार आत्मनिर्भर पंचायतें 2011, राधाकृष्णनन प्रकाशन पृ0सं0 64–65
12- पूनिया, मीनाक्षी, मीडिया इन रूरूल डेवलपमेंट 2014, रिषभ बुक्स नई दिल्ली
13- देसाई, ए0आर0 भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र (195 रावत पब्लिकेशन 2016), पृ0सं0 203
14- www.drishtiias.com
15- प्रमोद जोशी, कुरूक्षेत्र नवम्बर 2019 पृ0सं0 45
16- योजना सितम्बर 2018 पृ0सं0 13–18
17- पारख, जवरीमल्ल, जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, 2000, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन दिल्ली